ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

नदी में ज्वार आया
पर तुम आए कहां
खिड़की दरवाज़ा खुला है
पर तुम दिखे कहां
पेड़ों की डालियों पर
मुझे देख कोयल कूके
पर आज भी तुम दिखे नही
आख़िर तुम हो कहां

सजी–धजी मंदिर जाऊं
पूजा करूं सजदा करूं
कभी तो पसीजोगे तुम
गर दिख जाओ मुझे यहां
लोग मुझे देख हंसे
दीवानी लोग मुझे कहे
अश्रु के सैलाब से
भर गया ये जहां

अनुवाद : अनामिका घटक

आरामगाह : क़ाज़ी नज़रुल इस्लाम, ढाका

आज मैंने अपने घर की
निचली मंज़िल के
आख़िरी किनारे में पसरे
सन्नाटे से अंतरंग
एक संवाद किया

पहले तो उसने ख़ुद को
अतीत का वर्तमान बताया
फिर वर्तमान का भविष्य कहा

उसने मेरे घर की दीवारों पर
उगे पीपल की कई
छोटी बड़ी शाख़ें दिखाईं
और उनकी जड़ों में उभरी
दरारों की ओर संकेत करते हुए
आंगन के किसी कोने से
लाल-भूरी मिट्टी उठाई

इसी में छिपा है हमारे
वर्तमान का भविष्य
उसने कहा, मैं आने वाले
समय का धूल-धूसरित
एक स्वर्णिम उद्घोष हूं

'आधे चांद का नौहा' से

अक्टूबर-दिसम्बर 2023

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

अक्टूबर-दिसम्बर 2023
वर्ष 17 : अंक 47

आवरण सौजन्य : शीतेन्द्र नाथ चौधुरी
रेखांकन : अनुप्रिया

मानद सहयोग

शहंशाह आलम
लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क
247 एम आई जी
लोहियानगर, पटना - 800 020
e-mail : doabapatna@gmail.com
मो.-08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट
शाहगंज, पटना-800 006
मो.-09334116542

मूल्य : ₹ 175/- (डाक खर्च अलग)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

***संपादक* : जाबिर हुसेन**
मो.-09431602575

अक्टूबर-दिसम्बर 2023

दोआबा

समय से संगत

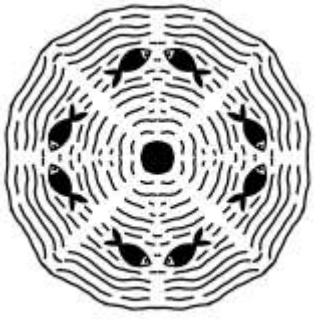

अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

आत्मगत

हेतु भारद्वाज : एक अपराधबोध के साथ उनकी याद / 08

संस्मरण

रूप सिंह चंदेल : रामप्रसाद बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी / 19

यात्रा-वृत्तांत

शीतेन्द्र नाथ चौधुरी : बांग्लादेश यात्रा / 28

मीरा कांत : सफ़रनामा / 51

ज्योतीन्द्र नाथ प्रसाद : गोवा की ओर / 64

फ्रांसीसी कहानी

अल्बेयर कामू : आगंतुक / 69

(अनुवाद : सुशांत सुप्रिय)

कविता समय

पल्लवी मुखर्जी / 85
पल्लवी शर्मा / 86
सोमनाथ शर्मा / 89
रविशंकर सिंह / 92
मीनाक्षी मिश्र / 94
मनीष यादव / 97
उज़्मा सरवत 'बीनिश' / 99
शैलेन्द्र चौहान / 101
जयघोष / 105
दिव्याश्री / 109
मनोज कुमार वर्मा / 112
विनीता बाडमेरा / 113
दिनेश कुमार / 115
प्रतिभा सिंह / 117
प्राञ्जल राय / 119

संवाद

क्रांतिनायक अज़ीमुल्ला ख़ां *(रूप सिंह चंदेल)*
माधव नागदा : 1857 की क्रांति का एक गुमनाम अध्याय / 122
कब्रिस्तान में कोयल *(मधुसूदन आनन्द)*
महेश दर्पण : कहानियों में संजीदगी से रमता मन / 129
आड़ा वक़्त *(राजनारायण बोहरे)*
अवध बिहारी पाठक : हठीले दर्दों का आख्यान / 138
आवाजों के छायादार चेहरे *(रास बिहारी गौड़)*
गोपाल माथुर : विस्तृत वितान का काव्यात्मक आख्यान / 144
दुनिया लौट आएगी *(शिव कुशवाहा)*
अरविन्द यादव : उम्मीदों का काव्य संग्रह / 149
कौन देस को वासी *(सूर्यबाला)*
प्रभा मजुमदार : लालसाओं के ब्लैकहोल में गुम होती आस्थाओं के नक्षत्र / 154
दोआबा-46 (जुलाई-सितम्बर, 2023)
राजाराम भादू - दोआबा : सृजन का मरूद्यान / 166
अवध बिहारी पाठक - त्रासद है यह अकेलापन / 170
सरला माहेश्वरी : यथार्थ से लबरेज़ अंक / 171
महेश दर्पण : अज़ीज़ दोस्त है दोआबा / 173
प्रीति सिन्हा : एक जीवन ... दोआबा-सा / 174
राजेश कुमार मिश्र : रोचकता से भरा अंक / 175